The Sameeksha (समीक्षा) Global: A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 2, Issue 1 - 2018

प्राथमिक से माध्यमिक शिक्षा तक सूक्ष्म शिक्षक शिक्षण प्रशिक्षण

अभिषेख कुमार पाण्डेय*

शोध सार (Abstract)

"शिक्षण में दक्षता प्राप्त करने हेतु नवीन अध्यापको को अपने शिक्षण कौशल में विशेष अभ्यास करने की आवश्यकता पड़ती है और यह कार्य तभी संभव होगा जब वह अपने शिक्षण प्रशिक्षण कौशल में भाग ले और अपनी रूचि दिखाए और उन सूक्ष्म शिक्षण की अवधारणा को बखूबी समझ सके। शिक्षक शिक्षण प्रशिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का इस्तेमाल कर अपनी कक्षाओं को रोचक, उद्देश्यपूर्ण तथा ज्ञान की प्रयोगशालाएँ बना सकने मे समर्थ होने की प्रक्रिया है। कक्षा शिक्षण का उद्देश्य विद्यार्थियो के अंदर ज्ञान, प्रयोग और कौशल को विकसित करना होता है, जहाँ एक शिक्षक की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाती है। यदि शिक्षक निम्नलिखित सूक्ष्म शिक्षण की तकनीक का इस्तेमाल अपनी कक्षाओं में करेंगे तो उन्हें पाठ पढ़ाने एवं शैक्षणिक–उद्देश्यों को प्राप्त करने में सुविधा होगी। शिक्षक जब विद्यार्थियों को निर्देशित करते हैं तो पे विभिन्न तरीकों का प्रयोग करते हैं। कभी–कभी शिक्षक, विद्यार्थियों को भाषण देते हैं और कभी–कभी वे अपने विद्यार्थियों को किसी लक्ष्य को पाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। सूक्ष्म शिक्षण को नियंत्रित अभ्यास की व्यवस्था के रूप में परिभाषित किया जाता है जिससे किसी निश्चित शिक्षण व्यवहार पर ध्यान केंद्रित करने के साथ–साथ नियंत्रित परिस्थितियों में शिक्षण का अभ्यास करना संभव हो पाता है। शुक्ष्म शिक्षण अध्यापन प्रशिक्षण के क्षेत्र में एक नविन आशा और उत्साह का प्रतिक बन कर शिक्षको और छात्रोके लिए एक चुनौती बना रहा है। सूक्ष्म शिक्षण ,प्रशिक्षण महाविद्यालयों के लिए एक वरदान बनकर आया ळे जिसके फलस्वरूप आज प्रशिक्षण हेतु छात्र–अध्यापको और छात्रा–अध्यापिकाओं के लिए में कक्षा अध्यापन कौशल के विकाश की बात प्रारंभ हो गई। शुक्ष्म शिक्षण एक प्रकार का प्रयोग शाला विधि है जिसमे छात्र अध्यापक और अध्यापिका शिक्षण कौशलो का अभ्यास बिना किसी को हानि पहुचाये करते है।"

"शिक्षा को सम्पूर्ण बनाने के लिए मानवीय होना चाहिए। इसमें केवल न तो बुद्धि का प्रशिक्षण बल्कि ह्रदय की स्वच्छता और आत्मा का अनुशासन भी सम्मिलित होना चाहिए"।

डॉ.राधाकृष्णन

भूमिका

हमारा भारत एक विकासशील देश हैं जो 21वी शताब्दी के लिए एक ऐसी शिक्षा नीति तैयार करने के पेशकश मे है जो की रुढ़िवादी समाज को एक अतिआधुनिक,

*शोधकर्ता, शिक्षक शिक्षाशास्त्र, नेहरु ग्राम भारती, डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी, इलाहाबाद।
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved.
ISSN: 2581-401X

प्रगतिशील एव सपन्न समाज ने परिवर्तन करने में मुख्या भूमिका निभाता हैं। यदि विद्यार्थी को जीवन में सफलता, सम्मान और पहचान प्राप्त करना है तो उस विद्यार्थी को शिक्षित होना पड़ेगा और यह तभी सभव है जब शिक्षा ग्रहण करेगा।

शिक्षा एक विद्यार्थी के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। शिक्षा के माध्यम से ही मानव का विकास और उन्नयन निर्भर करता हैं। विद्यार्थी के चरित्र का निर्माण और श्रृगार भी इन्ही के माध्यम से होता हैं। शिक्षा समाज की एक पीढ़ी को दुसरे पीढ़ी में निरंतर ज्ञान के हस्तांतरण के माध्यम से विद्यालयी समाज से गृह समाज और राष्ट्र समाज का विकाश कर उनके समाजीकरण का निर्माण करती है। तथा यह प्रणाली समाज में सामाजिक संस्कृति को बनाये रखने में मदद कराती हैं ।

मानव जीवन में शिक्षा का अत्यधिक महत्व है। मनुष्य के शरीर, मन, एवं आत्मा में निहित सर्वोत्तम शक्तियों के सर्वांगीण विकास को शिक्षा कहते है। शिक्षा द्वारा हमारे कीर्ति का प्रकाश हमारे चारो ओर विस्तारित होता है तथा हमारे समस्याओं को सुलझाने में, जीवन को सुसंस्कृत बनाए रखने में अनौपचारिक रूप से शिक्षा अपना भूनिका निभाती रहती है, हम इस धरती पर कही भी रहे यह अपने ज्ञान के द्वारा सदैव मार्गदर्शन का काम कराती रहती है।

अर्थात जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश से एक कमल का फूल खिल कर अपनी सुन्दरता को बिखेरता है और अस्त होने पर अपने पुरवा की अवस्था में बिराजमान हो जाता है ठीक उसी प्रकार शिक्षा के द्वारा एक बालक कमल के फूल की भाति खिल उठता है ये अशिक्षा के अभाव में दरिद्रता शोक एवं कष्ट के अन्धकार में डूबा रहता है। अर्थात शिक्षा वह मार्ग है जिसके द्वारा एक बालक के शारीरिक, मानसिक, नैतिक, संवेगात्मक, सज्ञानात्मक भाषायी विकास होता है इससे वह समाज का सभ्य, उत्तरदायी घटक एवं राष्ट्र का प्रखर चरित्रवान नागरिक बनकर राष्ट्र के उन्नति अपनी शक्ति का पूरा प्रयोग करता है।

शिक्षा किसी भी आधुनिक सभ्य उन्नत और विकसित कहे जाने वाले समाज का अनिर्वाय लक्षण है और इसके बिना प्रगति कभी भी पूर्ण और बहुआयामी नहीं हो सकती। विद्यार्थी ही राष्ट्र और समाज की उन्नति का मूल है, यदि हमें राष्ट्र को उन्नति एवं प्रगतिशील बनाना है तो समाज में सभ्य एवं सुसंस्कृत कुशल नागरिक बनाना ही ही होगा और यह कार्य शिक्षा के द्वारा पूर्ण सम्भव होता है।

जन्म के समय एक विद्यार्थी मात्र असतुलित गतिओं का एक समूह का निर्माण करता है जो दैनिक जनिक जीवन से संघर्ष करते हुए परिवार के बड़े लोगो की सहायता से जीवन और मृत्यु के लिए बाध्य होता हैं यह अनिवार्यता एक बालक के विकसित समाजीकरण का प्रतिबिम्ब का कार्य करता हैं। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जबकि जीवन के अस्तित्व की पहचान कराती है। जब एक शिशु जन्म लेता है तो मात्र वह एक असहाय प्राणी के अलवा कोई नहीं होता है जो अपने, माता–पिता और अन्य परिवार जन्य के सहयोग से जब उसको अपने अस्तित्व की पहचान नही थी, मानवीय जीवन का अर्थ स्पष्ट होता है।

एक बालक जब माँ के गर्भ से जन्म लेता है तो वह मात्र आश्रित रक्त, मांस, हड्डी, और अन्य अंगो का जीवित प्राणी होता है। उसके जीवन का वास्तविक पहचान नहीं होता है वह पशुवत की तरह आचरण दर्शाता हैं और उसकी जीतनी मूल प्रतिक्रिया हैं उनको अपने व्यवहारों मे समाहित कर कार्य करता हैं। शिक्षा अपने मार्गदर्शन मे छात्र की मूलप्रबित्तियों में परिपक्वता प्रदान करता हैं।

जिससे उस विद्यार्थी के व्यवहार, आचरण और क्रियाकलापों को उचित रूप से सामाजिक तथा सांस्कारिक बनाता हैं। और बालक के राचनात्मकशक्ति का भी बिश्वास भी बनाता हैं।

जन्म के समय बालक का ना तो किसी तरह का सामाजिक विकास होता है ना तो किसी तरह का बिरोधात्मक सामाजिक गुणों का विकास है। हमारे सामाजिक संस्कृति रूपी परिवार में उसका पालन पोषण होता हैं, और उस संस्कृति में पलते हुए उसका समाजीकरण का विकास होने लगता है। वास्तव में समाजीकरण की प्रक्रिया जन्म के कुछ समय पश्चात ही हो जाता है,जैसे एक शीशु को जब भूख लगता है तो वह रोता है और अपने हाथ पैर पटकना सुरुवात कर देता हैं उसी तरह से बालक में समय के अनुसार उसके सामाजिक विकास अर्थात एक अछे नागरिक के रूप में अस्तित्वा को प्राप्त करने हेतु उसको विद्यालय में भेजा जाता है जहाँ पर एक अछे मार्गदर्शक के रूप में अध्यापक के समक्ष बालक को भेजा जाता है जहाँ पर उसका शैक्षिक विकास किया जाता है। जब की एक बालक का प्राथमिक विद्यालय तो उसका परिवार होता है जहाँ पर उसके माँ और पिता उसके अध्यापक की भूमिका निभाते है फिर भी उसके सर्वांगीण सामाजिक विकास के लिए विद्यालय में प्रवेश कराया जाता है जहाँ पर उसके समाज से जुड़े सभी जानकारी दी जाती है।

किशोरावस्था से तात्पर्य ऐसी अवस्था जो की १२ वर्ष से १८/१६ वर्ष तक मणि जाती है जिस काल समय में बाल्यावस्था का प्रांत होता है और प्रौढ़ अवस्था का सुभारम्भ होता हैं इसी कारण से इस अवस्था को संधिकाल कहा जाता है। जब हम किशोर बालको की चर्चा करते है तो ये पाते है की इस काल में बालक के विकास की सबसे ज्यादा जरुरत होती है।

यहाँ सामान्य बालको से तात्पर्य ऐसे बालको से है जो वंशानुक्रम से प्राप्त रशिओं शक्तिओं के आधार पर भी लगभग सामान्य होते हैं और जिन्हें अपने विकास के लिए पर्यावरण भी सामान्य मिलता हैं। इस अवस्था में किशोर के बुद्धि का पूर्ण विकास हो जाता हैं उनमे धयन केन्द्रित करने की क्षमता का भी विकास होने लगता है अपने पराये का भी समझ होने लगता हैं स्मरण तीब्र करने की शक्ति प्रबल होने लगती हैं। स्थाईत्व का भी विकास होने लगता हैं, कल्पना का भी विकास हने लगता हैं बालक का आध्यामिक विद्यालय में प्रवेश हो जाता हैं। किशोरों में तर्क करने का चिंतन करने का विश्लेषण करने और अमूर्त चिंतन की शक्ति बढ़ जाती हैं। समस्या समाधान करना उनके बाये हाथ का खेल हो जाता हैं। इस आयु में बालको में मूर्त संप्रत्यय के साथ साथ अमूर्त संप्रत्यय का भी निर्माण हो जाता हैं। यही कारन है की किशोर काल के प्रारंभ अवस्था को प्रारंभिक किशोरावस्था और अंत को पाश्चात्य किशोरावस्था कहते हैं। साथ ही साथ उन बालक में शारीरिक और मानशिक परिपक्वता आती है और उनका सामाजिक क्षेत्र भी बढ़ने लगता है मित्रो की मंडली बना लगाने लगते है लड़के लड़कियों की तरफ आकर्षित होने लगते हैं और लड़कियां लडको की तरफ आकर्षित होने लगते हैं। जिसका यह निष्कर्ष निकालता है की उनका शब्द भंडार बढ़ने लगता हैं भिन्न भिन्न शब्दों में अंतर करना आ जाता हैं यहाँ तक की समानार्थी और पर्यायवाची शब्दों में भेद करने लगते हैं।

किशोर काल में मौखिक अभिव्यक्ति भी स्पस्ट हो जाती हैं वे अपने शब्दों को तर्कपूर्ण ढंग से समझाने में समर्थ हो जाते हैं लेखन शैली के साथ साथ वर्णात्मक शैली भी स्पष्ट होने लगती हैं। यही नहीं किशोरों में संवेगात्मक रूप से प्रेम भाव चिंता कष्ट क्रोध इर्ष्या एवं आक्रोश अपने तीव्रता के चरम सीमा पर जा चुका होता है इसी कारण इस काल को

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

संघर्ष काल भी कहते हैं।उनमे आत्मसम्मान की भावना के साथ अपने समूह के प्रति अपने स्थति के प्रति भी सचेत होते हैं।

"समाज के अन्दर समाजीकरण के विभिन्न साधनों में परिवार सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।"

कम्बाल यंग

यदि विद्यार्थी को जीवन में सफलता, सम्मान और पहचान प्राप्त करना है तो उस विद्यार्थी को शिक्षित होना पड़ेगा और यह तभी संभव हैं जब शिक्षा ग्रहण करेगा। शिक्षा एक विद्यार्थी के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। शिक्षा के माध्यम से ही मानव का विकास और उन्नयन निर्भर करता हैं। विद्यार्थी के चरित्र का निर्माण और श्रृंगार भी इन्ही के माध्यम से होता हैं। जब एक शिशु जन्म लेता है तो उसके जीवन का वास्तविक पहचान नहीं होता है वह पशुवत की तरह आचरण दर्शाता हैं और उसकी जीतनी मूल प्रबितिया हैं उनको अपने व्यवहारों में समाहित कर कार्य करता हैं। शिक्षा अपने मार्गदर्शन में छात्र की मूलप्रबित्तियों में परिपक्वता प्रदान करता हैं। जिससे उस विद्यार्थी के व्यवहार, आचरण और क्रियाकलापों को उचित रूप से सामाजिक तथा सांस्कारिक बनाता हैं। और बालक के रचनात्मकशक्ति का भी बिश्वास भी बनाता हैं

मानव जीवन में शिक्षा का अत्यधिक महत्व है। मनुष्य के शरीर, मन, एवं आत्मा में निहित सर्वोत्तम शक्तियों के सर्वांगीण विकास को शिक्षा कहते है। शिक्षा किसी भी आधुनिक सभ्य उन्नत और विकसित कहे जाने वाले समाज का अनिर्वाय लक्षण है और इसके बिना प्रगति कभी भी पूर्ण और बहुआयामी नही हो सकती। विद्यार्थी ही राष्ट्र और समाज की उन्नति का मूल है, यदि हमें राष्ट्र को उन्नति एवं प्रगतिशील बनाना है तो समाज में सभ्य एवं सुसंस्कृत कुशल नागरिक बनाना ही ही होगा और यह कार्य शिक्षा के द्वारा पूर्ण सम्भव होता है। वर्तमान शिक्षा की सार्थकता वही तक है जिस सिमा तक मानवीय आवश्यकताओ अपेक्षाओं की पूर्ति कर सके। आज की चकाचौंध डिजिटल प्रणाली, भौतिक व पूंजीवादी सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था में विद्यार्थी की अपेक्षाओ व आकांक्षाओ का स्तर कॉफी ऊँचा होता है और उसकी पूर्ति न हों पर विद्यार्थी कुंठा व नीरशा का शिकार हो जाता है।

शिक्षा विद्यार्थी के व्यवहार को परिवर्तित व परिमार्जित करती है। शिक्षा के द्वारा ही विद्यार्थी को सभ्य एवं सुसंस्कृत बनाकर उसे समाज एवं राष्ट्र का एक उपयोगी नागरिक बनाया जा सकता है। शिक्षा किसी भी देश के विकास का मूल आधार होता है, इसके द्वारा न केवल कुशल मानव संशाधन का निर्माण होता है, बल्कि देश के विकास के लिए योग्य नागरिक का निर्माण भी होता है। किसी भी देश में बालक शैक्षिक विकास उसके जन्म जात गुणों एवं पर्यावरणीय दशाओ दोनों से परभावित होती है।

हम बालक के जन्मजात क्षमताओ परिवर्तन नहीं कर सकते है किन्तु उसे बेहतर विद्यालय एवं घरेलु वातावरण उपलब्ध कराकर उसमे अन्तर्निहित क्षमताओं का विकास कर सकते हैं। प्रत्येक समाज में विभिन्न स्थिति रखने वाले वर्ग पाये जाते है। स्थितियो के उतार चढाव का क्रम चलता रहता है और इसी आधार पर विभिन्न वर्गो का निर्माण होता है।

एक वर्ग का विद्यार्थी दूसरे वर्ग के विद्यार्थी से अपने को सर्वश्रेष्ठ समझता हैं। जबकि समाज में प्रत्येक वर्ग के एक दूसरे पर निर्भर रहते है। समाज ने विद्यार्थी को चार वर्गों में बाटा है प्रथम वर्ग ब्राह्मण, द्वितीय वर्ग क्षत्रिय, तृतीय वर्ग वैश्य और चतुर्थ वर्ग छुद्र जो आज इन वर्गो के नाम से जाने जाते है। शिक्षा का स्तरीकरण से गहरा सम्बन्ध है,

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

समाज में शिक्षा के अवसर की विसमता यथारू शिक्षण संस्थाओं का असमान वितरण व उनके स्तर की असमानताओं आदि के कारण सरकारी, अर्ध–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों की अपेक्षा गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में आर्थिक भिन्नता के कारण शिक्षा की सुबिधाओं के अवसर काम प्राप्त होते है, जो एक धनी उच्च सामाजिक वर्ग के बच्चो को आसानी से विद्यालयों द्वारा उपलब्ध हो जाते है जिसके कारण मध्यम एवं निम्न वर्ग के बच्चे मानसिक और बौद्धिक रूप से पिदे रह जा जाते है

प्रशिक्षण का क्या महत्व है?

इस सवाल के दायरे में कई सारे सवाल आते हैं। सबसे पहला सवाल है कि प्रशिक्षण क्या है? दूसरा सवाल है कि शिक्षा और प्रशिक्षण में क्या अंतर है? तीसरा सवाल हो सकता है कि अगर अन्य क्षेत्रों के तरह बदलते वक्त के साथ खुद को अपडेट करने, नये विचारों और नई तकनीक के साथ सामंजस्य बैठाने की बात स्वीकार कर ली जाए तो एजुकेशन सेक्टर में काम करने वाले शिक्षकों, शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण की क्या उपयोगिता है। शिक्षा के क्षेत्र में प्रशिक्षण का क्या योगदान है।

प्रशिक्षण की जरूरत

प्रशिक्षण का उद्देश्य किसी व्यक्ति या समूह के ज्ञान, कौशल व अभिवृत्ति (नॉलेज, स्किल और एटीट्यूड) के ऊपर फोकस किया जाता है। ज्ञान में किसी क्षेत्र विशेष की अवधारणाओं पर व्यापक समझ बनाने के ऊपर फोकस किया जाता है।

जैसे अगर शिक्षा के दर्शन की बात करें तो इसमें सीखना कैसे होता है? बच्चे कैसे सीखते हैं? बड़ों का सीखना बच्चों के सीखने से फर्क कैसे होता है? ज्ञान का निर्माण कैसे होता है? हमारे दिमाग में कैसे कोई अवधारणा आकार लेती है इत्यादि विभिन्न पहलुओं पर फोक किया जाता है।

ज्ञान के बारे में एक बात कही जा सकती है कि यह समय के साथ बदलने वाली चीज़ है। किसी क्षेत्र विशेष में होने वाले शोध व विचार–विमर्श से किसी क्षेत्र के विभिन्न आयामों के नये–नये पहलू हमारे सामने आते हैं। जिसके अनुसार हमें खुद को अपडेट करना होता है। उदाहरण के तौर पर कुछ साल पहले शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक ज्ञान को स्रोत माना जाता था, बच्चे शिक्षक से सीखते हैं इस बात को महत्व दिया जाता था। इसके कारण शिक्षण की सारी विधियों में शिक्षक को एक केंद्रीय स्थान प्राप्त था। लेकिन जैसे–जैसे शिक्षा मनोविज्ञान, दर्शन व शिक्षा के क्षेत्र में होने वाले विभिन्न शोधों व उसके निष्कर्ष लोगों के सामने आये तो इस अवधारणा में भी बदलाव का रास्ता खुला।

नये विचारों के प्रति खुलापन

रूसो ने कहा था कि बच्चा अपने ज्ञान का मौलिक निर्माता है। शिक्षा के क्षेत्र में इस विचार को आज भी काफी महत्व दिया जाता है। एक बच्चा खुद से सीखता है, इस अवधारणा की स्वीकृति ने शिक्षकों को एक सुगमकर्ता के रूप में देखने वाले नये नजरिये का निर्माण किया। इसके कारण शिक्षा के क्षेत्र में होने वाले प्रशिक्षणों में यह बात बार–बार दोहराई गई कि शिक्षक खुद को एक सुगमकर्ता के रूप में देखें और बच्चों को कक्षा में होने वाले संवाद में बराबर भागीदारी का मौका दें। वे बच्चों को सवाल पूछने और अपने सवालों का जवाब लोगों के साथ मिलकर और खुद से खोजने की दिशा में प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करें।

कोई नया विचार धीरे–धीरे स्वीकृति पाता है। किसी काम को करने का सही तरीका सीखने के लिए कौशल विकास की जरूरत होती है। अगर किसी विचार को देखने का

हमारा नजरिया शंका से भरा रहे तो शायद हम अपना सौ फीसदी नहीं दे सकते। शिक्षा के क्षेत्र में होने वाले प्रशिक्षण इन समस्याओं का समाधान तलाशने की दिशा में कोशिश करते हैं। उदाहरण के तौर पर नेतृत्व (लीडरशिप) पर केंद्रित प्रशिक्षण एक प्रधानाध्यापक को संस्था का बेहतर नेतृत्व करने के लिए तैयार करता है तो वहीं भाषा के ऊपर केंद्रित कोई प्रशिक्षण एक भाषा शिक्षक को अपना विषय अच्छे से पढ़ाने के लिए जरूरी कौशल व ज्ञान से लैस करता है।

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए कह सकते हैं कि शिक्षा के क्षेत्र में प्रशिक्षण की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। इसी कारण से समय–समय पर शिक्षक प्रशिक्षण की बात होती है। हालांकि ऐसी कार्यशालाओं के बारे में शिक्षकों की शिकायत होती है कि कुछ नया सीखने को नही मिलता। एक ही बात बार–बार दोहराई जाती है। मामला दो–तरफा है। अगर प्रशिक्षण के लिए आने वाले लोग एक तैयारी के साथ आएं तो प्रशिक्षण देने वाले संदर्भ व्यक्तियों (रिसोर्स पर्सन) पर एक सकारात्मक दबाव होता है कि वे अपनी तरफ से अच्छा प्रयास करें। इसके अभाव में दोनों तरफ से बस खानापूर्ति होती है। ऐसी खानापूर्ति समय की बरबादी कही जा सकती है, जो प्रशिक्षणो के महत्व को कम करती है। व इसके बारे में एक नकारात्मक छवि का विकास करती है। जबकि जरूरत है कि प्रशिक्षणो की गंभीरता व उसकी उपयोगिता में विश्वास की बहाली फिर से हो और सीखने–सीखने का माहौल बने।

वर्तमान में शिक्षक प्रशिक्षण की जगह 'शिक्षक शिक्षा' शब्द का इस्तेमाल किया जा रहा है। यानि शिक्षक अपने विषय से संबंधित तैयारी खुद करें और अपने पेशेवर कौशलों व क्षमताओं के विकास के लिए पहल करें। वे खुद से सीख सकते हैं। उनको अपने सीखने के तरीके और रुचि के हिसाब से खुद को तैयार करना चाहिए।

सूक्ष्म शिक्षण

सूक्ष्म शिक्षण अध्यापन की प्रक्रिया में एक नवीन आशा और उतशाह का प्रतीक बन कर शिक्षको को, छात्रो को, शिक्षक प्रशिक्षक को आज चुनौती भरे शब्दों में पुकार रही हैं। सूक्ष्म शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कक्षा अध्यापन के कौशल के विकास की बात प्रारंभ हो गयी हैं। सूक्ष्म शिक्षण एक प्रकार की प्रयोग शाला विधि हैं, जिसमे छात्राध्यापक शिक्षण कौशलो का अभ्याश बिना किसी के हानि पहुचाये करते हैं। यह विधि प्रयोगशाला की की सभी शर्तो को पूरा करते हैं।

सूक्ष्म शिक्षण की परिभाषा

सूक्ष्म शिक्षण अध्यापको को कक्षा अध्यापन प्रक्रियाओं की शिक्षा देने हेतु नवीन शिक्षण प्रणाली हैं। भारत और विश्व में अनेक भागों में इस पर अभी शोध कार्य चल हैं। प्रारंभ से लेकर आज तक अनेक प्रकार की सूक्ष्म शिक्षण की परिभाषाए दी गई है जैसे

सूक्ष्म शिक्षण सरलीकृत शिक्षण प्रक्रियां हैं जो छोटे छोटे आकार की कक्षाका में कम समय में पूर्ण होती है"

दी.डब्लू.एल.

"सूक्ष्म शिक्षण एक प्रकार की प्रशिक्षण विधि है, जिसमे छात्राध्यापक एक शिक्षण कौशल का प्रयोग करते हुए थोड़ी अवधी के लिए छोटे छात्र समूह को कोई संप्रत्य पढ़ता हैं।"

बी.के.पासी

अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र मे सूक्ष्म शिक्षण एक नया आविष्कार है। यह एक अवसर प्रदान करता है जिससे एक समय पर एक ही कौशल को चुना जा सकता है और एक नियोजित तरीके से इसका अभ्यास करना है। सूक्ष्म शिक्षण एक सुनियोजित शिक्षण है:

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

1. कक्षा के आकार को 5–12 लोगों में सीमित करना।
2. समय सीमा को 36 मिनट तक कम करना।
3. पाठ के आकार को कम करना।
4. शिक्षण कौशल को कम करना।

सूक्ष्म शिक्षण अध्यापक शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रम में एक नवीनतम् आविष्कार है जो कि अध्यापक के व्यवहार को निश्चित उद्देश्यों के अनुसार ढालने में सहायक होता है।

उद्देश्य

1. एक अध्यापक प्रशिक्षु को सीखने और नए शिक्षण कौशल को नियंत्रित परिस्थितियों में आत्मसात् करने योग्य बनाना।
2. एक अध्यापक प्रशिक्षु को कई शिक्षण कौशल में योग्य बनाना।
3. अध्यापक प्रशिक्षु को शिक्षण में विश्वास करने योग्य बनाना।
4. शिक्षार्थियों में नए कौशल का विकास करना।

सूक्ष्म शिक्षण सामान्य ज्ञान के परिणामों और फ़ीडबैक के मानकों को विस्तारित करता है। एक संक्षिप्त सूक्ष्म पाठ को पढ़ाने के तुरंत बाद प्रशिक्षु अपने प्रदर्शन की आलोचना में जुट जाता है।

समय सीमा

शिक्षण कौशल के अभ्यास के लिए उपयुक्त परिस्थितियां और पर्याप्त सुविधाएं बनाने के लिए कई बातें ध्यान में रखी जाती हैं। सूक्ष्म शिक्षण के भारतीय नमूने के अनुसार जो कि NCERT द्वारा विकसित किया गया है वो इस प्रकार है:

- पढ़ाना: 6 मिनट
- फ़ीडबैक: 6 मिनट
- पुनर्योजना: 6 मिनट
- पुनर्शिक्षण: 6 मिनट
- पुनर्फ़ीडबैक: 6 मिनट
- कुल: 36 मिनट

सूक्ष्म शिक्षण का चक्र

सूक्ष्म शिक्षण चक्र में शामिल छह चरण हैं – योजना, पाठन, फ़ीडबैक, पुनर्योजना, पुनर्शिक्षण और पुनर्फ़ीडबैक। अभ्यास सत्र के उद्देश्य की ज़रूरतों के अनुसार भिन्नताएं हो सकती हैं। ये चरण निम्नलिखित चित्र के अनुसार प्रदर्शित किया जाएगा। यहां विद्यार्थी–शिक्षक एकसाथ विभिन्न कौशलों को एकीकृत करते हैं। एक कृत्रिम परिस्थिति में वह एक वास्तविक कक्षा में पढ़ाता है और सभी कौशलों को एकीकृत करने का प्रयास करता है। यह चक्र एक सीमा तक काम करता है यदि प्रशिक्षु एक निश्चित कौशल में उस्तादी हासिल करता है तो।

सूक्ष्म शिक्षण के लाभ

यह एक आविष्कार है जिसमें सीखने और तकनीक के प्रयोग के सिद्धांतों का मूल आधार है। सूक्ष्म शिक्षण के लाभ इस प्रकार हैं। यह एक प्रशिक्षण उपकरण है जिससे शिक्षण अभ्यास और प्रभावी शिक्षक तैयार किए जा सकते हैं। यह शिक्षण को सुगम्य करता है जिससे नवागंतुकों के लिए आसानी होती है। शिक्षकों में विश्वास की भावना पैदा करना। सूक्ष्म शिक्षण एक वास्तविक कक्षा में या कृत्रिम कक्षा में किया जा सकता है।यह विशेष कार्यों की सफ़लता के लिए प्रशिक्षण पर ध्यान केंद्रित करता है जैसे निर्देशात्मक कौशल, पाठ्यक्रम सामग्री और शिक्षण तकनीक। इसमें अधिक नियंत्रण और नियंत्रित शिक्षण अभ्यास शामिल होता है। क्षमता के अनुसार यह प्रशिक्षु को शिक्षण कौशल के विकास करने में मदद करता है। यह एक प्रभावी फ़ीडबैक उपकरण है जिससे शिक्षक के व्यवहार को बदला जा सकता है। यह एक अत्यंत व्यक्तिगत प्रकार का शिक्षण प्रशिक्षण है। यह पूर्व या सेवा के दौरान

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved.
ISSN: 2581-401X

शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम में शिक्षण प्रभाव को विकसित करने में सक्षम ळें यह वस्तुनिष्ठ और व्यवस्थित अवलोकन में सहायक है क्योंकि यह एक अवलोकन सीमा देता है। यह विभिन्न प्रकार के कौशल आत्मसात करने में सहायक है जो कि एक सफल टध्यापक का आधार तय करता ळें यह सामान्य कक्षा की जटिलताओं जैसे कक्षा के आकार, कक्षा का समय और अनुशासन की समस्याओं को कम करता है। शिक्षा के क्षेत्र में सूक्ष्म शिक्षण एक नया विचार है। वे लोग जो पारम्परिक दृष्टिकोण रखते हैं और अपनी विचारधारा नहीं बदलना चाहते वे सूक्ष्म शिक्षण की नयी तकनीकों को धारण करने में कठिनाई का सामना करते हैं। ऐसी परिस्थितियां हमेशा बनेंगी जब–जब नयी चीज़ें आएंगी। पुराने राष्ट्रों को नए राष्ट्रों में बदलने की ज़रूरत है क्योंकि नए राष्ट्र निश्चित ही अलग हैं।

शिक्षण कौशल

कक्षा में शिक्षक जो कुछ भी पढाता हैं अथवा शिक्षण का कार्य करता हैं, उसमे वह अनेक प्रकार का कार्य करता हैं। इन्ही व्यवहारों को शिक्षण कौशल कहतें हैं। एक शिक्षण कौशल सामान व्यवहारों का एक समूह हैं, विभिन्न शिक्षण कौशल मिलकर एक उचित कक्षा कक्ष शिक्षण प्रक्रिया या योजना का निर्माण करते हैं। अर्थात शिक्षण कई कौशलों को मिलाकर बनता हैं। शिक्षण कौशल से सम्बंधित व्यवहारों का एक समुच्चय होता हैं जो छात्र के अधिगम में सहायता करता हैं। अन्य व्यवहारों की भाति भी शिक्षक व्यवहारों में संशोधन किया जा सकता हैं। शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक को अनेक कार्य एक साथ करने पड़ते हैं जैसे लिखना, प्रश्न पूछना, स्पष्ट करना, प्रदर्शन करना आदि इसलिये इसे क्रियाओं का सकुल कहा जाता है। अध्यापक का कार्य विद्यार्थी को इन क्रियाओं में संलग्न करना है। यह शिक्षण कौशल काफी तकनीकी युक्त और परिश्रमपूर्ण होते हैं। इन शिक्षण कौशलों की प्रकृति एक जैसी नही होती। इनमे निहित शिक्षण व्यवहारों में भी काफी अन्तर पाया जाता है और इसलिए उन सभी का अभ्यास और उन्हें विकसित करने की प्रक्रिया में अन्तर पाया जाना स्वाभाविक ही हैं। वास्तव में शिक्षण कौशलों द्वारा शिक्षक के व्यवहार प्रदर्शित होते है। शिक्षक की सभी क्रियाएँ विद्यार्थियों के अधिगम की ओर केन्द्रित रहती हैं। शिक्षक की इन क्रियाओं में कभी व्याख्यान देना, कभी उदाहरण प्रस्तुत करना, कभी विशिष्ट शब्दों की व्याख्या करना तथा कभी कक्षा में कुछ करके दिखाना आदि सम्मिलित होता है। शिक्षण प्रक्रिया में प्रयुक्त होने वाली इस प्रकार की सभी क्रियाएँ ही शिक्षण कौशल कहलाती हैं।

यही विभिन्न शिक्षण क्रियाओं की सफलता ही शिक्षण कला बन जाती हैं। संक्षेप में शिक्षण कौशल शिक्षक के व्यवहारों का एक समूह होता है जो विद्यार्थियों के अधिगम में किसी न किसी रुप में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप में सहायता करता है।

शिक्षण कौशल की परिभाषा

श्री बी. के. पासी ने शिक्षण कौशल शब्द को इस प्रकार परिभाषित किया हैं: *"शिक्षण कौशल उन परस्पर सम्बन्धित शिक्षण–क्रियाओं या व्यवहारों का समूह हैं जो विद्यार्थी के अधिगम में सहायता देते हैं।"*

एन. एल. गेज ने भी शिक्षण कौशल शब्द को इस प्रकार परिभाषित किया हैं: *"शिक्षण कौशल वे अनुदेशनात्मक क्रियाएँ और विधियाँ है जिनका प्रयोग शिक्षक अपनी कक्षा में कर सकता है। ये शिक्षण के विभिन्न स्तरों से सम्बन्धित होती है या शिक्षक की निरन्तर निष्पति के रुप में होती हैं।"*

शैक्षिक शब्दकोष के अनुसार भी शिक्षण कौशल शब्द को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता हैं: *"कौशल मानसिक शारीरिक*

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

क्रियाओं की क्रमबद्ध और समन्वित प्रणाली होता है।"

अतः शिक्षण कौशल मुख्यतया कक्षा में अन्तक्रिया जैसी परिस्थिति उत्पन्न करने में, अधिगम में, विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति में तथा शिक्षण क्रियाओं के विशिष्टीकरण में सहायक होते हैं। ये सभी शिक्षण कौशलों की विशेषताएँ है। सामाजिक अध्ययन को पढ़ाने के लिये कुछ शिक्षण कौशलों की अति अधिक आवश्यकता होती हैं। यदि प्रशिक्षण कार्यक्रम में विधिवत् सूक्ष्म शिक्षण पाठों का आयोजन किया जाए तो अध्यापक उचित अभ्यास के माध्यम से कुशल अध्यापक बनकर वांछित सफलता प्राप्त कर सकते है।

शिक्षक में शिक्षण कौशल का होना बहुत जरूरी

शिक्षक में शिक्षण कौशल का होना बहुत जरूरी जब मैं हाशमी गर्ल्स पीजी इग्नू बीएड प्रथम वर्ष कार्यशाला के तीसरे दिन डा. संत कुमार मिश्रा को बोलते हुए सुना कि पाठ योजना बनाना शिक्षण कार्य के लिए अति आवश्यक है क्योंकि पाठ योजना के माध्यम से शिक्षक विद्यार्थियों को उचित प्रकार से शिक्षिक कर सकता है। शिक्षक में शिक्षण कौशल का होना बहुत जरूरी है क्योंकि जब तक शिक्षक कुशल नहीं होगा तब सही प्रकार से शिक्षण कार्य नहीं कर सकेगा। कौशल विकास के लिए छात्राध्यापक सूक्ष्म पाठ योजनाए बनाकर शिक्षण कौशल को विकसित कर सकते हैं। उसी के अनुरूप शिक्षं प्रशिक्षण संस्थान के अनुराग यादव जी को कहते हुए सुना कि कक्षा में किस प्रकार किस विषय को कैसे पढ़ाना है, इस पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि छात्रों को किस प्रकार पढ़ाया जाये, यह शिक्षक स्वंय अपनी भूमिका बनाकर ही तय कर सकता है।

बहुत से शिक्षक स्कूल में अपने पाठ के दौरान ढेर सारे प्रश्न पूछते है। लेकिन इनमे से कितने प्रश्न विद्यार्थियों के चिंतन में महत्वपूर्ण सहायता देते हैं। दरअसल शिक्षक अक्सर कक्षा में अपना आधे से अधिक समय प्रश्न पूछने में लगाते हैं। बहुत से प्रश्नों के लिए केवल एक शब्द के उत्तर की आवश्यकता होती है और विद्यार्थियों को उत्तर देने के लिए बहुत कम समय दिया जाता है। अतः बहुत से विद्यार्थी पाठ से जुड़ने को लेकर उत्साहित नहीं होते हैं। फिर भी विद्यार्थियों के चिंतन और भागीदारी को प्रेरित करने के लिए कक्षा में प्रश्नों का अनेक तरीकों का उपयोग किया जा सकता है और उसे ज्यादा प्रभावी तरीके से बनाया जा सकता है।

यह इकाई प्रश्नों के ऐसे सर्वाधिक प्रभाती प्रकारों की पहचान करने पर ध्यान केंद्रित करती है। जिनका कि शिक्षक विद्यार्थियों के चिंतन को बढ़ावा देने और उनकी पढ़ाई को विस्तारित करने के लिए उपयोग कर सकते हैं। इसके अलावा यह आपको स्वयं अपने पाठों में भी इनमें से कुछ प्रविधियों और कौशलों को आज़माने का अवसर भी प्रदान करती है। बलों और उनके गुणधर्मों की खोज करने वाली गतिविधियों के ज़रिये आप इस बात का पता लगाएंगे कि किस प्रकार से प्रश्न विद्यार्थियों की गहन समझ को विकसित करने में मदद कर सकते हैं। प्रश्न पूछने के कौशलों को शिक्षण में वृद्धि करने के लिए विज्ञान के समस्त विषयों और अन्य विषयों में भी प्रयोग किया जा सकता है।नियोजित और उद्देश्य सहित तरीके से अच्छे प्रश्नों को पूछने से विद्यार्थियों की उपलब्धि में महत्वपूर्ण अंतर आएगा। प्रश्नों का उपयोग विद्यार्थियों को उनके विचारों, उनकी समझदारी और उनकी प्रगति के बारे में फीडबैक प्रदान करने के लिए किया जा सकता है।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved.
ISSN: 2581-401X

अधिकतर विद्यार्थी इस प्रकार की जानकारी को प्राप्त करने में उत्साह दिखाते हैं, विशेष रूप से तब, जबकि यह सकारात्मक और रचनात्मक तरीके से प्रदान की गयी हो। यह उनकी प्रगति को मापने में मदद करती है और उनमें आत्म–विश्वास का संचार करती है।पाठ योजना बनाते समय महत्वपूर्ण काम यह होता है कि आप उन प्रश्नों के बारे में स्पष्ट हो जाएं जिसका कि आप शिक्षण के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उपयोग कर सकते हैं। विद्यार्थियों में बल की वैज्ञानिक अवधारना को विकसित करना इसका वस्तुओं की गति पर प्रभाव को भिन्न तरीके से बताना आसान काम नहीं है। ऐसे प्रश्न पूछना महत्वपूर्ण है जिससे विद्यार्थी सिद्धान्त और अपने अनुभव को जोड़ते हुए खोज कर सके और स्वयं अपेक्षित हल को निकाल कर बल विषय में गहन समझ विकसित कर सकें। ऐसा करने के लिए आपको प्रश्न पूछने के कौशलों का रचनात्मक और गतिशील तरीकों से उपयोग करने में सक्षम होना चाहिए, ताकि विद्यार्थी सोचने के लिए प्रोत्साहित हों।जब आप प्रश्न पूछते हैं, तो क्या सभी विद्यार्थी प्रश्नों के बारे में सोचते हैं? आपको कैसे पता? आप किस तरह से सभी विद्यार्थियों को अधिक भाग लेने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं? बहुत से शिक्षक उत्तर देने के लिए कहने से पहले विद्यार्थियों को केवल एक सेकेंड का समय प्रदान करते हैं।

क्या आप विद्यार्थियों को अपने उत्तरों के बारे में सोचने के लिए समय प्रदान करते हैं? शिक्षक भी अक्सर उन्हीं विद्यार्थियों से प्रश्नों का उत्तर देने के लिए कहते हैं, जिन्होंने अपने हाथ पहले से उठा रखे होते हैं। पाठ चलता रह सकता है। लेकिन, किसी को उत्तर देने के लिए कहने से पहले मात्र कुछ और सेकेंड तक इंतज़ार करने से आप निम्नलिखित में वृद्धि को देखेंगे: विद्यार्थी के उत्तरों की लंबाई, उत्तर देने वाले, विद्यार्थियों की संख्या, विद्यार्थी के प्रश्नों की आवृत्ति, कम सक्षम विद्यार्थियों के पास से उत्तरों की संख्या, विद्यार्थियों के बीच सकारात्मक संवाद।

सूक्ष्म शिक्षण चक्र

भारतीय प्रतिमान में सूक्ष्म शिक्षण चक्र की अवधि या प्रक्रिया 36 मिनट की होती है। इसका समय विभाजन इस प्रकार हैं–

1. **प्रस्तावना**– सूक्ष्म शिक्षण प्रक्रिया प्रारम्भ करने से पूर्व शिक्षक द्वारा छात्राध्यापक के समक्ष सूक्ष्म शिक्षण का अर्थ, विशेषताए व विधियॉ आदि के बारे में बताया जाता है।
2. **सूक्ष्म शिक्षण का पाठ निर्माण**– शिक्षक द्वारा छात्राध्यापकों को एक छोटी इकाई एवं एक शिक्षण कौशल पर आधारित सूक्ष्म पाठ–योजना बनाने की विधि बताई जाती है ।
3. **शिक्षण अवस्था**–छात्राध्यापकों द्वारा पाठ–योजना के आधार पर 6 मिनट तक 5 से 10 छात्रों की कक्षा को पढ़ाया जाता है।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

4. **प्रतिपुष्टि**–प्रत्येक छात्राध्यापक को शिक्षण के उपरांत प्रतिपुश्टि शिक्षक व सह–छात्राध्यापकों द्वारा प्रदान की जाती है।
5. **पुनः पाठ योजना**–प्रतिपुष्टि के आधार सुझावों को ध्यान में रखते हुए छात्राध्यापक पुनः पाठ योजना तैयार करता है।
6. **पुनः शिक्षण**–पुनः बनाई गई पाठ–योजना के आधार पर छात्राध्यापक पुनः शिक्षण प्रस्तुत करता है।
7. **पुनः प्रतिपुष्टि**–छात्राध्यापक को शिक्षक व सह–छात्राध्यापकों द्वारा पुनः प्रतिपुष्टि प्रदान की जाती है।

इस प्रकार, शिक्षण–कौशलों में दक्षता प्रदान करने के लिए सूक्ष्म शिक्षण चक्र विधि अत्यन्त प्रभावशाली है।

सूक्ष्म शिक्षण कौशल के प्रकार

शिक्षक वह धुरी होता है जिस पर बालकेंद्रित शिक्षा निर्भर है। शिक्षक एक माली की तरह होता है जो पौधों के समान बालकों का पोषण करके उनका शारीरिक,मानसिक,और सामाजिक विकास करता है। अतः बालकेंद्रित शिक्षा की सफलता शिक्षक की योग्यता पर निर्भर करती है। इसलिए उसे स्वतंत्र होकर निर्णय लेना चाहिये कि बालक को क्या सिखाना है। और सिखाने मे विभिन्न प्रकार के व्यवहारों का क्रियान्वयन किया जाता है। उसमे जब हम किसी तरह का व्यवहार करते है तो उसे शिक्षण कौशल कहते है। कक्षा की जटिलता को कम करने के लिये इसका प्रयोग किया जाता है। विभिन्न शिक्षण कौशल मिलकर शिक्षण प्रक्रिया का निर्माण करते है।अतः शिक्षण कौशल, क्रियाओ और शिक्षण व्यवहारों का एक समूह होता है जो छात्रो को सीखने मे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सहायता करता हैं। शिक्षण कौशल सामान्यत सभी विषयो के लिये एक जैसे होते है और विषय की विशिष्टता के अनुसार अलग भी होते हैं।

उद्देश्य लेखन कौशल

बच्चों नें लिखने का कौशल सर्वप्रथम माता–पिता द्वारा घर पर विकसित होता है। मां अपने बच्चे को अपने पास बिठाकर पहले के दिनो मे सिलेट मे चाक से लिखवाती थी। आज कापी में लिखवाती है उन्हें अक्षर से परिचित करवाती है। लेखन का उद्देश्य होता है कि इसे पढ़ा जाए, इसलिए लेखन पर ध्यान केंद्रित करने में पतन पर ध्यान केंद्रित करना हमेशा ही शामिल रहेगा। जब आप और आपके बच्चे लेखन के बारे में बात करते हैं, तो आप उनके मौखिक भाषा कौशल भी विकसित करते हैं

प्रस्तावना कौशल

पाठ प्रस्तावना कौशल। अर्थात् छात्रो को नया पाठ ग्रहण करने से है। इसका सम्बन्ध छात्रो के पूर्व ज्ञान से होता है। प्रस्तावना से पाठ का उद्देश्य स्पष्ट हो जाता है।पाठ की प्रस्तावना प्रस्तुत करने की बहुत सी विधियाँ है जैसे–कहानी दोहराना, कविता को सुनाकर, मॉडल या चित्र की सहायता लेकर, प्रश्नो से, प्रयोग या प्रदर्शन से। इस कौशल का महत्व इस उद्देश्य है जैसे–पूर्व ज्ञान को नवीन ज्ञान से जोड़ना, छात्रो को पाठ सीखने हेतु तैयार करना, पाठ को पढ़ने हेतु प्रेरणा देना। पाठ प्रस्तावना हेतु कुछ बातों का ध्यान रखना होता है जैसे–प्रस्तावना पूर्व ज्ञान पर आधारित हो। प्रासंगिक होनी चाहिये, पूरी कक्षा पर प्रभावी हो, प्रेरणा देने वाली और जीवन से जोड़ने का प्रयास करना चाहिये।

अनुशीलन या खोजक प्रश्न कौशल

शिक्षक के द्वारा प्रश्न किया जानाः बल यह इकाई किस बारे में है। बहुत से शिक्षक स्कूल में अपने पाठ के दौरान ढेर सारे प्रश्न पूछते हैं। लेकिन इनमें से कितने प्रश्न विद्यार्थियों के चिंतन में महत्वपूर्ण सहायता देते हैं। दरअसल शिक्षक अक्सर कक्षा में

अपना आधे से अधिक समय प्रश्न पूछने में लगाते हैं। बहुत से प्रश्नों के लिए केवल एक शब्द के उत्तर की आवश्यकता होती है और विद्यार्थियों को उत्तर देने के लिए बहुत कम समय दिया जाता है। अतः बहुत से विद्यार्थी पाठ से जुड़ने को लेकर उत्साहित नहीं होते हैं। फिर भी विद्यार्थियों के चिंतन और भागीदारी को प्रेरित करने के लिए कक्षा में प्रश्नों का अनेक तरीकों का उपयोग किया जा सकता है और उसे ज्यादा प्रभावी तरीके से बनाया जा सकता है। यह इकाई प्रश्नों के ऐसे सर्वाधिक प्रभावी प्रकारों की पहचान करने पर ध्यान केंद्रित करती है। जिनका कि शिक्षक विद्यार्थियों के चिंतन को बढ़ावा देने और उनकी पढ़ाई को विस्तारित करने के लिए उपयोग कर सकते हैं। इसके अलावा यह आपको स्वयं अपने पाठों में भी इनमें से कुछ प्रविधियों और कौशलों को आज़माने का अवसर भी प्रदान करती है। बलों और उनके गुणधर्मों की खोज करने वाली गतिविधियों के ज़रिये आप इस बात का पता लगाएंगे कि किस प्रकार से प्रश्न विद्यार्थियों की गहन समझ को विकसित करने में मदद कर सकते हैं। प्रश्न पूछने के कौशलों को शिक्षण में वृद्धि करने के लिए विज्ञान के समस्त विषयों और अन्य विषयों में भी प्रयोग किया जा सकता है।

व्याख्या कौशल

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में बहुत से तथ्य संप्रत्यय नियम अथवा सिद्धान्त ऐसे होते है जिन्हें अच्छी तरह करना और बोधगम्य बनाने हेतु उनकी व्याख्या करना आवश्यक हो जाता है। इस दृष्टि से व्याख्या कौशल का अर्जन एक अध्यापक के लिए काफी जरूरी है। 'व्याख्या करने से तात्पर्य विषय वस्तु पर आधारित उन कथनों से है जो आपस में पूरी तरह सम्बन्धित, क्रमबद्ध और सार्थक होते हैं। इस तरह व्याख्या कौशल को एक ऐसी तकनीक अथवा युक्ति के रुप में समझा जा सकता है जिसके द्वारा किसी संप्रत्यय, विचार या नियम को अच्छी तरह बोधगम्य बनाने के लिए परस्पर सम्बन्धित, क्रमबद्ध और सार्थक कथनों की भली—भाँति सहायता ली जा सके।

दृष्टांत कौशल

शिक्षक के उपकरण के मध्य उदाहरण का अर्थ है। प्रकाश डालना और अध्यापन में उदाहरण का तात्पर्य बालको को ज्ञान का अश्पष्टिकरण करने का आत्मसात कराने से हैं। कुछ कथनों के अनुसार अच्छे उदाहरण दुर्बोध कथन को सजीव बनाने से तथा सरल बना देने से है।ये रूचि को जागृत करते हैं तथा पाठ्यवस्तु को स्पष्ट करके मनोरंजन एवं समझाने योग्य बना देते हैं क्योकि ये इन्द्रीओं को संबोधित करते हैं इसलिए चिंतन को सही मार्ग पर ले जाते हैं। 'याख्या कौशल इस कौशल के द्वारा विषयवस्तु को सरल, स्पष्ट तथा सुगम बनाया जाता हैं। इसका प्रयोग अध्यापक के द्वारा विभिन्न सरल कथनों, दृश्य—श्रव्य सामग्री तथा उदाहरणों की सहायता से विषयवस्तु की व्याख्या के लिये किया जाता है। किसी व्यक्ति को किसी विचार, अवधारणा, नियम, अथवा क्रिया का बोध कराना व्याख्या कौशल कहलाता है। यदि शाब्दिक कौशल है ओर इसके मुख्य रूप से दो तथ्य हैं—विद्यार्थियों की आयु परिपक्वता एवं पूर्व ज्ञान के अनुकूल तथा अवधारणा, नियम आदि के अनुकूल उचित कथनों का चयन करना। अवधारणा, विचार अथवा घटना को समझाने के लिये चुने हुए कथनों में अन्तर्सम्बन्ध स्थापित करना और उनका प्रयोग करना। व्याख्या को प्रभावशाली बनाने के लिये अध्यापक को वांछित व्यवहारों में वृद्धि कर अवांछित व्यवहारों से बचना होता है। (5) उदाहरणों द्वारा दृष्टान्त कौशल कुछ अवधारणाएँ इतनी अमूर्त होती हैं कि व्याख्या की सहायता से विशिष्ट बालक उसे ठीक ढंग से नहीं समझ पाते। ऐसी परिस्थिति में एक कुशल अध्यापक विचार, अवधारणा व सिद्धान्त की व्याख्या करने के

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

लिये उदाहरणों का प्रयोग करता है। उदाहरण सहित दृष्टान्त कौशल एक ऐसी कला है जिसके द्वारा अध्यापक अनुकूल उदाहरणों का न्यायसंगत चयन करता है और विद्यार्थियों के सम्मुख उन्हें उचित रूप से प्रस्तुत करता है ताकि वे सम्बन्धित विचार, अवधारणा, सिद्धान्त आदि को अच्छी तरह समझ सकें और उनका उचित प्रयोग कर सकें। उदाहरण द्वारा दृष्टान्त कौशल में मुख्यतः दो प्रक्रियाएँ निहित होती हैं–1- विद्यार्थियों के सम्मुख किसी विचार अथवा सिद्धान्त को स्पष्ट करना। 2- इस बात की पुष्टि करना कि विद्यार्थियों ने उस विचार को अच्छी प्रकार समझ लिया है या नहीं। (6) विवरण कौशल विशिष्ट बालकों को कविता, कहानियों आदि का विवरण देकर शिक्षण को रुचिपूर्ण बनाता है। विवरण का अर्थ है– कहानियाँ सुनाना या घटनाओं का वर्णन करना। पेंटन के अनुसार, विवरण अपने–आप में एक कला है, जिसका लक्ष्य वाणा के माध्यम से विद्यार्थियों के सम्मुख स्पष्ट, रोचक एवं विधिवत क्रम से घटनाओं को इस प्रकार प्रस्तुत करना है कि वे अपनी कल्पनाओं में उनका ऐसे पुनर्निर्माण कर सकें जैसे वे स्वयं उनके दर्शक हों या उनमें भाग ले रह हों। विवरण कौशल वह कला है जिसके द्वारा अध्यापक अन्तर्सम्बन्धित कथनों की सहायता से कोई तथ्य, नियम, सिद्धान्त का बोधगम्य कराता हे। यह एक शाब्दिक कौशल हे जिसके दो प्रमुख तत्व हैं– 1. विद्यार्थियों की आयु, परिपक्वता एवं पूर्व ज्ञान के अनुकूल तथा अवधारणा, नियम, घटना के अनुकूल उचित कथनों का चयन करना। 2. अवधारणा, विचार अथ्वा घटना आदि के बोध के लियेक चुने हुए कथनों में अन्तर्सम्बन्ध स्थापित करना व उनका प्रयोग करना। विवरण कौशल में तीन प्रकार के कथन प्रयुक्त होते हैं– 1. वर्णनात्मक कथन 2. अर्थात्मक कथन 3. तर्कात्मक कथन (7) कथात्मक कौशल छोटी कक्षाओं में शिक्षण के लिये कथात्मक कौशल का प्रयोग बहुत उपयोगी एवं प्रभावशाली है। प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों को प्राचीन समय के महान पुरुषों तथा स्त्रियों की, प्रसिद्ध शासकों, सुधारकों, साधुओं, वैज्ञानिकों तथा व्यापार की कहानियाँ सुनाई जा सकती हैं। बालक स्वभावतः कहानी प्रिय होते हैं। अध्यापक के अन्दर इस कौशल का होना अनिवाय्र है। इस कौशल के प्रयोग के लिये अध्यापक की कल्पना शक्ति उत्तम हो, अतीत का उचित तथा पूण्र ज्ञान हो और अवसर के अनुसार कहानियों के प्रयोग के लिये उपयुक्त संग्रह हो। कथात्मक कौशल ऐसी कला है जिसके द्वारा अध्यापक उचित कहानी का चयन करता है और उसे विद्यार्थियों के सामने उचित रूप से प्रस्तुत करता है ताकि वे सम्बन्धित विचार, अवधारणा आदि को अच्दी तरह समझ सकें और उनके आदर्शों का अनुसरण करने की प्रेरणा प्राप्त कर सकें।

प्रबलन या पुनर्बलन कौशल

ऐसी कोई क्रिया जो अनुक्रिया की संख्या में वृद्धि करती है पुनर्बलन कहलाती है। मानव द्वारा सीखे हुए अधिकांशतः व्यवहार की व्याख्या हम क्रियाप्रसूत अनुबन्धन के सहयोग से कर सकते हैं। क्रियाप्रसूत अनुबन्धन में पुनर्बलन की निर्णायक भूमिका है। यह नकारात्मक या सकारात्मक हो सकता ळें।

सकारात्मक पुनर्बलनः स्किनर के प्रयोग में चूहा बार–बार लीवर दबाने की अनुक्रिया करता है और भोजन प्राप्त कर लेता है। इसे सकारात्मक पुनर्बलन कहते हैं। इस प्रकार एक सकारात्मक पुनर्बलन या पुरस्कार (उदाहरणार्थ भोजन, यौन–सुख आदि) वह प्रवृत्ति है जिससे उस विशिष्ट व्यवहार के प्रभाव को सीखने को बल मिलता है। सकारात्मक पुनर्बलन वह कोई भी उद्दीपन (स्टिमुलेशन) है जिसके माध्यम से उस विशिष्ट अनुक्रिया को आगे जाने का बल मिलता है। (उदाहरण– भोजन, लीवर के दबाने को बल प्रदान करता है।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved.
ISSN: 2581-401X

नकारात्मक पुनर्बलनः नकारात्मक पुनर्बलन द्वारा एक बिल्कुल भिन्न प्रकार से अनुक्रिया की संख्या में वृद्धि की जाती है। मान लीजिए स्किनर बाक्स के अन्दर चूहे के पंजों पर प्रत्येक सेकेन्ड पर विद्युत आघात दिया जाता है। जैसे ही चूहा लीवर दबाता है विद्युत आघात दस सेकेन्ड के लिए रोक दिया जाता है इससे चूहे की अनुक्रिया की संख्या में वृद्धि हो जाती है। इस विधि को नकारात्मक पुनर्बलन कहा जाता है जिसमें प्रतिकूल उद्दीपन का प्रयोग किया जाता है। (उदाहरण– गर्मी, विद्युत आघात, तेजी से दौड़ना आदि)।

नकारात्मक' शब्द पुनर्बलन की प्रकृति को बताता है (विमुखी उद्दीपन) यह पुनर्बलन है क्योंकि यह अनुक्रियाओं की संख्या में वृद्धि करता है। इस विधि को 'पलायन' अधिगम कहा गया क्योंकि चूहा अगर लीवर को दबाता है तो आघात से बच सकता है। दूसरे तरह के नकारात्मक पुनर्बलन के परिणामस्वरूप जो अनुबन्धन होता है उसे बचाव द्वारा सीखना कहा गया जिसमें चूहा लीवर दबाकर आघात से बच सकता है। पलायन या बचाव द्वारा सीखने में नकारात्मक पुनर्बलन का प्रयोग किया जाता है और प्राणी पलायन द्वारा इससे बच जाता है।

पुनर्बलन की अनुसूचीः अनुक्रियाओं को पुनर्बलित कैसे किया जा सकता है? यह निरन्तर पुनर्बलन या आंशिक पुनर्बलन के प्रयोग से हो सकता है। निरन्तर पुनर्बलन में प्रत्येक उचित अनुक्रिया को पुनर्बलित किया जाता है। उदाहरण के लिये जितनी बार भी चूहा लीवर दबाता है उसे उतनी ही बार प्लेट में भोजन (पुनर्बलन) प्रस्तुत किया जाता है। वैकल्पिक तौर पर अनुक्रियाओं को कभी आंशिक या कभी रुकावट के साथ पुनर्बलित किया जाता है। निरन्तर पुनर्बलन के मिलने से नये व्यवहार स्थापित करने या सुदृढ़ करने में बहुत सहायता मिलती है। दूसरी तरफ आंशिक पुनर्बलन सीखे हुये व्यवहार को बनाये रखने में अधिक शक्तिशाली है।

प्रश्निकरण कौशल

प्रश्न पूछना भी एक कला हैं इसमें एक अलग तरह का प्रवाह होना चाहिए। अतः शिक्षक को सदैव प्रश्नीकरण कौशल मे माहिरता होनी चाहिए इस कौशल के जनक सुकरात महोदय हैं इन्हों ने इस कौशल को बखूबी से प्रयोग किया और वो भी बीच चौराहे पर। उनके अनुसार प्रश्न पूछना भी एक कला है। शिक्षक द्वारा पूछे गए प्रश्नों की संरचना, पुछने की प्रक्रिया, शिक्षक द्वारा प्रश्न को दोहराना एवं प्रश्न उत्पद अर्थात शिक्षक ने उस प्रश्न के उत्तर किस प्रकार प्राप्त किये है।

उद्दीपन परिवर्तन कौशल

उद्दीपन परिवर्तन कौशल इस सिद्धान्त पर आधारित है कि उद्दीपन में परिवर्तन ध्यान को आकर्षित करता है। यह विद्यार्थ की अधिगम में रुचि उत्पन्न करता है। प्रायः यह देखा गया है कि एक उद्दीपन पर ज्यादा देर तक ध्यान स्थिर रखना कठिन होता है। अध्यापक को विशिष्ट बालकों के ध्यान को आकर्षित करने के लिये उद्दीपन कौशल में पारंगत होना आवश्यक है। विद्यार्थियों के ध्यान को आकृष्ट करने के लिये अध्यापक के व्यवहार में परिवर्तन को उद्दीपन परिवर्तन कौशल कहा जाता है। *स्नेह जोशी के अनुसार– 'विद्यार्थियों को उच्च स्तरीय ज्ञान प्राप्त करने और उसे बनाये रखने के लिये अध्यापक को कब, क्या और कैसे परिवर्तन करना है इसके लिये कौशल की आवश्यकता होती है ऐसे कौशल को उद्दीपन परिवर्तन कौशल कहते है।*

श्यामपटट लेखन कौशल

श्यामपटट अथवा चॉकबोर्ड महत्त्वपूर्ण दृश्य साधन है। इसका प्रयोग अध्यापक अपने पाठ को सरल रोचक एवं आकर्षक बनाने के लिये

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

करता है। अध्यापक को श्यामपटट प्रयोग करने की कला में दक्ष होना चाहिये जिससे वह इसका प्रयोग करके शिक्षण को सफल बना सके। श्यामपटट पर साफ–साफ लिखा जाना, लेख का स्पष्ट रूप से पढ़ा जाना और लेखन श्यामपटट लेखन कहलाता है।

पाठ समापन कौशल

पाठ समापन कौशल के अंतर्गत उन सभी सूक्ष्म शिक्षण कौशलो का प्रयोग एक साथ करते हुए शिक्षण विधि के द्वारा बालको को पढाया जाता हैं इसके अंतर्गत आप अपना पाठ समापन करते हुए ये बताते है की अज तक हमने जो पढ़ा है उसका यह शरांश है।

इन सूक्ष्म शिक्षण कौशल हेतु निम्न शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता हैं।

शिक्षण विधि

जिस ढंग से शिक्षक शिक्षार्थी को ज्ञान प्रदान करता है उसे शिक्षण विधि कहते हैं। षशिक्षण विधिष पद का प्रयोग बड़े व्यापक अर्थ में होता है। एक ओर तो इसके अंतर्गत अनेक प्रणालियाँ एवं योजनाएँ सम्मिलित की जाती हैं, दूसरी ओर शिक्षण की बहुत सी प्रक्रियाएँ भी सम्मिलित कर ली जाती हैं।

कभी–कभी लोग युक्तियों को भी विधि मान लेते हैं; परंतु ऐसा करना भूल है। युक्तियाँ किसी विधि का अंग हो सकती हैं, संपूर्ण विधि नहीं। एक ही युक्ति अनेक विधियों में प्रयुक्त हो सकती है।

निगमनात्मक तथा आगमनात्मक

पाठ्यविषय को प्रस्तुत करने के दो ढंग हो सकते हैं। एक में छात्रों को कोई सामान्य सिद्धांत बताकर उसकी जाँच या पुष्टि के लिए अनेक उदाहरण दिए जाते हैं। दूसरे में पहले अनेक उदाहरण देकर छात्रों से कोई सामान्य नियम निकलवाया जाता है। पहली विधि को निगमनात्मक विधि और दूसरी को आगमनात्मक विधि कहते हैं। ये विधि व्याकरण शिक्षण के लिए सबसे उपयुक्त मानी जाती है।

संश्लेषणात्मक तथा विश्लेषणात्मक

दूसरे दृष्टिकोण से शिक्षण विधि के दो अन्य प्रकार हो सकते है। पाठ्यवस्तु को उपस्थित करने का ढंग यदि ऐसा हैं कि पहले अंगों का ज्ञान देकर तब पूर्ण वस्तु का ज्ञान कराया जाता है तो उसे संश्लेषणात्मक विधि कहते हैं। जैसे हिंदी पढ़ाने में पहले वर्णमाला सिखाकर तब शब्दों का ज्ञान कराया जाता है। तत्पश्चात् शब्दों से वाक्य बनवाए जाते हैं। परंतु यदि पहले वाक्य सिखाकर तब शब्द और अंत में वर्ण सिखाए जाएँ तो यह विश्लेषणात्मक विधि कहलाएगी क्योंकि इसमें पूर्ण से अंगो की ओर चलते है।

वस्तुविधि

शिक्षण का एक प्रसिद्ध सूत्र है–मूर्त से अमूर्त की ओर। वास्तव में हमें बाह्य संसार का ज्ञान अपनी ज्ञानेंद्रियों के द्वारा होता है जिनमें नेत्र प्रमुख हैं। किसी वस्तु पर दृष्टि पड़ते ही हमे उसका सामान्य परिचय मिल जाता है। अतः मूर्त वस्तु ज्ञान प्रदान करने का सबसे सरल साधन है। इसीलिये आरंभ से वस्तुविधि का सहारा लिया जाता है अर्थात् बच्चों को पढ़ाने के लिए वस्तुओं का प्रदर्शन करके उनके विषय में ज्ञान प्रदान किया जाता है। यहाँ तक कि अमूर्त को भी मूर्त बनाने का प्रयास किया जाता है। जैसे, तीन और दो पाँच को समझाने के लिए पहले छात्रों के सम्मुख तीन गोलियाँ रखी जाती हैं। फिर उनमें दो गोलियाँ और मिलाकर सबको एक साथ गिनाते हैं तब तीन और दो पाँच स्पष्ट हो जाता है।

दृष्टांतविधि

वस्तुविधि का एक दूसरा रूप है–दृष्टांतविधि। वस्तुविधि में जिस प्रकार वस्तुओं के द्वारा ज्ञान प्रदान किया जाता है।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

दृष्टांतविधि में उसी प्रकार दृष्टांतों के द्वारा। दृष्टांत दृश्य भी हो सकते हैं और श्रव्य भी। इसमें चित्र, मानचित्र, चित्रपट आदि के सहारे वस्तु का स्पष्टीकरण किया जाता है। साथ ही उपमा, उदाहरण, कहानी, चुटकुले आदि के द्वारा भी विषय का स्पष्टीकरण हो सकता है।

कथनविधि एवं व्याख्यानविधि

वस्तु एवं दृष्टांतविधियों से ज्ञान प्राप्त करते करते जब बच्चों को कुछ कुछ अनुमान करने तथा अप्रत्यक्ष वस्तु को भी समझने का अभ्यास हो जाता है तब कथनविधि का सहारा लिया जाता है। इसमें वर्णन के द्वारा छात्रों को पाठ्यवस्तु का ज्ञान दिया जाता है। परंतु इस विधि में छात्र अधिकतर निष्क्रिय श्रोता बने रहते हैं और पाठन प्रभावशाली नहीं होता। इसी से प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री हर्बर्ट स्पेंसर ने कहा है– बच्चों को कम से कम बतलाना चाहिए, उन्हें अधिक से अधिक स्वतरू ज्ञान द्वारा सीखना चाहिए०। व्याख्यानविधि इसी की सहचरी है। उच्च कक्षाओं में प्रायरू व्याख्यानविधि का ही प्रयोग लाभदायक समझा जाता है।

कथनविधि में प्रायरू हर्बर्ट के पाँच सोपानों का प्रयोग किया जाता है। वे हैं

1. प्रस्तावना,
2. प्रस्तुतीकरण,
3. तुलना या सिद्धांतस्थापन,
4. आवृत्ति,
5. प्रयोग।

परंतु केवल ज्ञानार्जन के पाठों में ही पाँचों सोपानों का प्रयोग होता है। कौशल तथा रसास्वादन के पाठों में कुछ सीमित सोपानों का ही प्रयोग होता है।

प्रश्नोत्तर विधि (सुकराती विधि)

प्रश्न यद्यपि एक युक्ति है फिर भी सुकरात ने प्रश्नोत्तर को एक विधि के रूप में प्रयोग करके इसे अधिक महत्व प्रदान किया है। इसी से इसे सुकराती विधि कहते हैं। इसमें प्रश्नकर्ता से ही प्रश्न किए जाते हैं और उसके उत्तरों के आधार पर उसी से प्रश्न करते करते अपेक्षित उत्तर निकलवा लिया जाता है।

करके सीखना

जब से बाल मनोविज्ञान के विकास ने यह सिद्ध कर दिया है कि शिक्षा केंद्र न तो विषय है न अध्यापक वरन् छात्र है तब से शिक्षण में सक्रियता को अधिक महत्व दिया जाने लगा है। करके सीखना (learning by doing) अर्थात् स्वानुभव द्वारा ज्ञान प्राप्त करना आजकल का सर्वाधिक व्यापक शिक्षणसिद्धांत है। अतरू रूसो से लेकर मांटेसरी और ड्यूबी तक शिक्षाशास्त्रियों ने बच्चों की ज्ञानेंद्रियों को अधिक कार्यशील बनाने तथा उनके द्वारा शिक्षा देने पर अधिक बल दिया है। महात्मा गांधी ने भी इसी सिद्धांत के आधार पर बेसिक शिक्षा को जन्म दिया। अतरू सक्रिय विधि के अंतर्गत अनेक विधियाँ सम्मिलित की जा सकती हैं जैसे– शोधविधि (ह्यूरिस्टिक), योजना (प्रोजेक्ट) विधि, डाल्टन प्रणाली, बेसिक–शिक्षा–विधि, इत्यादि।

शोधविधि

जर्मनी के प्रोफेसर आर्मस्ट्रांग द्वारा शोधविधि का प्रतिपादन हुआ था। इस विधि में छात्रों को उपयुक्त वातावरण में रखकर स्वयं किसी तथ्य को ढूढ़ने के लिए प्रेरित किया जाता है। इसका यह अर्थ नहीं है कि अध्यापक कुछ नहीं करता और छात्रों को मनमाना काम करने को छोड़ देता है। सच पूछिए तो वह छात्र का पथप्रदर्शन करता तथा उसे गलत रास्ते से हटाकर सीधे रास्ते पर लाता रहता है। उसका लक्ष्य यह रहता है कि जो ज्ञान छात्र अपने निरीक्षण अथवा प्रयोग द्वारा प्राप्त कर सकता है उसे बताया न जाए। इस विधि का प्रयोग पहले तो विज्ञान की शिक्षा में किया गया। फिर धीरे–धीरे गणित,

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

भूगोल तथा अन्य विषयों में भी इसका प्रयोग होने लगा।

प्रोजेक्ट विधि

अमरीका के प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री ड्यूवी, किलपैट्रिक, स्टीवेंसन आदि के सम्मिलित प्रयास का फल योजना (प्रोजेक्ट) विधि है। इसके अनुसार ज्ञानप्राप्ति के लिए स्वाभाविक वातावरण अधिक उपयुक्त होता है। इस विधि से पढ़ाने के लिए पहले कोई समस्या ली जाती है जो प्रायरू छात्रों के द्वारा उठाई जाती है और उस समस्या का हल करने के लिए उन्हीं के द्वारा योजना बनाई जाती है और योजना को स्वाभाविक वातावरण में पूर्ण किया जाता है।

इसी से इसकी परिभाषा इस प्रकार की जाती है कि योजना वह समस्यामूलक कार्य है जो स्वाभाविक वातावरण में पूर्ण किया जाए।

डाल्टन योजना

अमरीका के डाल्टन नामक स्थान में 1912 से 1915 के बीच कुमारी हेलेन पार्खर्स्ट ने शिक्षा की एक नई विधि प्रयुक्त की जिसे डाल्टन योजना कहते हैं। यह विधि कक्षाशिक्षण के दोषों को दूर करने के लिए लिए आविष्कृत की गई थी। डाल्टन योजना में कक्षाभवन का स्थान प्रयोगशाला ले लेती है। प्रत्येक विषय की एक प्रयोगशाला होती है जिसमे उस विषय के अध्ययन के लिए पुस्तकें, चित्र, मानचित्र तथा अन्य सामग्री के अतिरिक्त सन्दर्भग्रंथ भी रहते हैं। विषय का विशेषज्ञ अध्यापक प्रयोगशाला में बैठकर छात्रों की सहायता करता, उनके कार्यों का संशोधन तथा जाँच करता है।

वर्ष भर का कार्य 9 या 10 भागों में बाँटक निर्धारित कार्य (असाइनमेंट) के रूप में प्रत्येक छात्र को लिखित दिया जाता है। छात्र उस निर्धारित कार्य को अपनी रुचि के अनुसार विभिन्न प्रयोगशालाओं में जाकर पूरा करता है। कार्य अन्वितियों में बँटा रहता है। जितनी अन्विति का कार्य पूरा हो जाता है उतनी का उल्लेख उसके रेखापत्र (ग्राफकार्ड) पर किया जाता है। एक मास का कार्य पूरा हो जाने पर ही दूसरे मास का निर्धारित कार्य दिया जाता है। इस प्रकार छात्र की उन्नति उसके किए हुए कार्य पर निर्भर रहती है। इस योजना में छात्रों को अपनी रुचि और सुविधा के अनुसार कार्य करने की छूट रहती है। मूल स्रोतों से अध्ययन करने के कारण उनमें स्वावलंबन भी आ जाता है। इस योजना के अनेक रूपांतर हुए जैस बटेविया, विनेटका आदि योजनाएँ। डेक्रौली योजना यद्यपि इससे पूर्व की है, फिर भी उसके सिद्धांतों में डाल्टन योजना के आधार पर परिवर्तन किए गए।

वर्धा योजना या बुनियादी तालीम

महात्मा गांधी की वर्धा योजना या बेसिक शिक्षा (बुनियादी तालीम) भी अपने ढंग की एक शिक्षाविधि है। गांधी जी ने देश की तत्कालीन स्थिति को देखते हुए शिक्षा में हाथ के काम को प्रधानता दी। उनका विश्वास था कि जब तक छात्र हाथ से काम नहीं करता तब तक उसे श्रम का महत्व नहीं ज्ञात होता।

सैद्धांतिक ज्ञान मनुष्य को अहंकारी एवं निष्क्रिय बना देता है। अतरू बच्चों को आरंभ से ही किसी न किसी हस्तकौशल के द्वारा शिक्षा देनी चाहिए। हमारे देश में कृषि एवं कताई–बुनाई बुनियादी धंधे हैं जिनमें देश की तीन चौथाई जनता लगी हुई है। अतरू उन्होंने इन्हीं दोनों को मूल हस्तकौशल मानकर शिक्षा में प्रमुख स्थान दिया। बेसिक शिक्षा की प्रमुख विशेषताएँ हैं,

1. मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा,
2. हस्तकौशल केंद्रित शिक्षा,
3. 7 से 14 वर्ष तक निःशुल्क अनिवार्य शिक्षा,

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

4. शिक्षा स्वावलंबी हो, अर्थात् कम से कम अध्यापकों का वेतन छात्रों के किए हुए कार्यों की बिक्री से आ जाए।

अंतिम सिद्धांत का बड़ा विरोध हुआ और बेसिक शिक्षा में से हटा दिया गया। अंग्रेजी शिक्षा ने देश के अधिकांश शिक्षित वर्ग को ऐसा पंगु बना दिया है कि वे हाथ से काम करना हेय मानते हैं।

यही कारण है कि संपन्न तथा उच्च वर्ग के लोगों ने बुनियादी शिक्षा के प्रति उदासीनता दिखाई जिससे यह शिक्षा केवल निर्धन वर्ग के लिए रह गई है। अतरू यह धीरे–धीरे असफल होती जा रही है।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि शिक्षणविधियाँ अनेक हैं। सबका प्रवर्तन किसी न किसी विशेष परिस्थिति में किसी शिक्षाशास्त्री के द्वारा हुआ है।

वास्तव में प्रत्येक अध्यापक की अपनी शिक्षा विधि होती है जिससे व छात्रों को उनकी रुचि तथा योग्यता के अनुरूप ज्ञान प्रदान करता है। जो विधि जिसके लिए अधिक उपयोगी हो वही उसके लिए सर्वश्रेष्ठ विधि है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. onlinetyari.com/blog-hindi/understanding-micro-teaching-concepts-in-hindi.
[2]. https://www.bhaskar.com/harayana/rohtak/news/HAR-ROH-OMC-MAT-latest-rohtak-news-034002-2247807-NOR.html.
[3]. http://www.hindikunj.com/2016/05/role-of-teachers-in-students-life.html.
[4]. http://bharatiyashiksha.com.
[5]. http://onlinetyari.com/blog-hindi/understanding-micro-teaching-concepts-in-hindi/.
[6]. https://www.facebook.com/currentGkBanKeR/posts/1786787444897508.
[7]. http://newsexpand.com/micro-learning-cycle/.
[8]. https://www.facebook.com/parikshadrishtipublication/posts/348375325629202.
[9]. https://www.jagran.com/uttar-pradesh/bhadohi-11186781.html.
[10]. https://www.facebook.com/parikshadrishtipublication/posts/34837532562920.

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X